पद १०

(राग: झिंजोटी - ताल: धुमाळी)

प्रभु मज कडे कां ना पाही रे। हे कां कोणी मजला सांगा। न कळे मजला कोणी तरी सांगा।।ध्रु.।। रमवुनि जप तप ध्यानी या मना। भक्ति भावें रचिले गुण गाना। तरी मज कडे कां ना पाही रे।।१॥ काम क्रोध मद मोह वासना। या संगी का व्यर्थ मी पणा। मौनचि राहुनि पाही रे।।२।। पूर्व जन्मीची का ही यातना। की दुर्दैवाची ही कामना। निष्कळ जन्म हा जाई रे।।३।। मूर्ख मनाची वेडी कल्पना। चिकत सिद्ध ऐकुनि या वचना। तव पाशी प्रभु पाही रे।।४।।